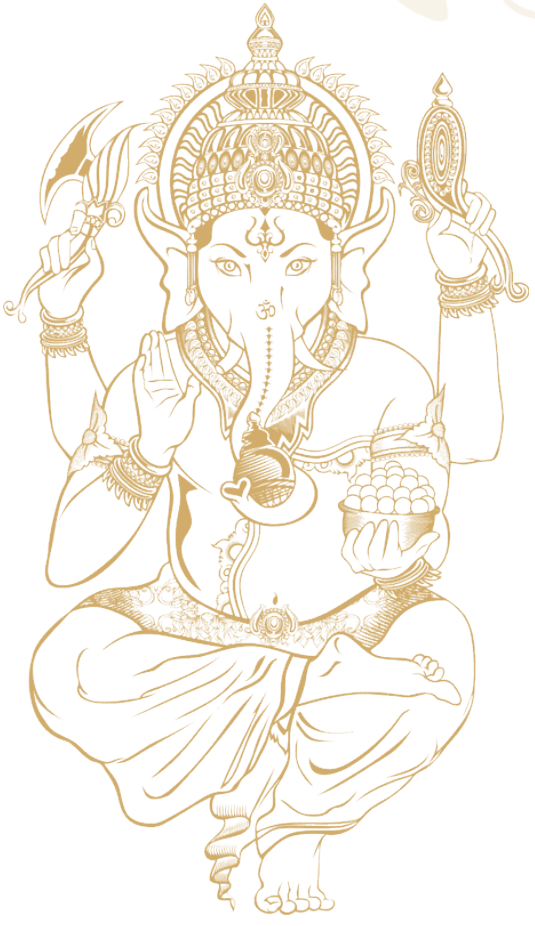

# Mr. S bhargava

# Ms.aakansha

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119166502

| | | |
|---|---|---|
| पुल्लिंग | लिंग | स्त्रीलिंग |
| 24/03/1995 | जन्म तिथि | 06/10/1996 |
| शुक्रवार | दिन | रविवार |
| घंटे 17:17:00 | जन्म समय | 12:45:40 घंटे |
| घटी 27:49:40 | जन्म समय(घटी) | 16:49:28 घटी |
| India | देश | India |
| Katni | स्थान | Chandauli |
| 23:47:00 उत्तर | अक्षांश | 25:15:00 उत्तर |
| 80:29:00 पूर्व | रेखांश | 83:17:00 पूर्व |
| 82:30:00 पूर्व | मध्य रेखांश | 82:30:00 पूर्व |
| घंटे -00:08:04 | स्थानिक संस्कार | 00:03:08 घंटे |
| घंटे 00:00:00 | ग्रीष्म संस्कार | 00:00:00 घंटे |
| 06:09:07 | सूर्योदय | 05:51:16 |
| 18:20:20 | सूर्यास्त | 17:38:20 |
| 23:47:36 | चित्रपक्षीय अयनांश | 23:48:44 |

| विंशोत्तरी | अंश | राशि | ग्रह | राशि | अंश | विंशोत्तरी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शुक्र 12वर्ष 10मा 24दि | 25:53:37 | सिंह | लग्न | धनु | 21:01:22 | शनि 10वर्ष 7मा 28दि |
| मंगल | 09:34:42 | मीन | सूर्य | कन्या | 19:29:58 | केतु |
| 16/02/2024 | 18:03:57 | धनु | चंद्र | कर्क | 09:11:08 | 04/06/2024 |
| 16/02/2031 | 19:22:20 | कर्क व | मंगल | कर्क | 22:22:08 | 05/06/2031 |
| मंगल 15/07/2024 | 20:53:53 | कुंभ | बुध | कन्या | 02:10:36 | केतु 31/10/2024 |
| राहु 02/08/2025 | 21:29:21 | वृश्चि | गुरु | धनु | 15:39:33 | शुक्र 31/12/2025 |
| गुरु 09/07/2026 | 01:45:16 | कुंभ | शुक्र | सिंह | 08:41:35 | सूर्य 08/05/2026 |
| शनि 18/08/2027 | 23:27:44 | कुंभ | शनि व | मीन | 09:25:06 | चन्द्र 07/12/2026 |
| बुध 14/08/2028 | 12:16:05 | तुला व | राहु | कन्या | 14:11:05 | मंगल 05/05/2027 |
| केतु 10/01/2029 | 12:16:05 | मेष व | केतु | मीन | 14:11:05 | राहु 23/05/2028 |
| शुक्र 12/03/2030 | 05:57:40 | मक | हर्ष व | मक | 06:50:07 | गुरु 29/04/2029 |
| सूर्य 18/07/2030 | 01:25:58 | मक | नेप व | मक | 01:09:52 | शनि 08/06/2030 |
| चन्द्र 16/02/2031 | 06:41:39 | वृश्चि व | प्लूटो | वृश्चि | 07:23:30 | बुध 05/06/2031 |

## लग्न-चलित

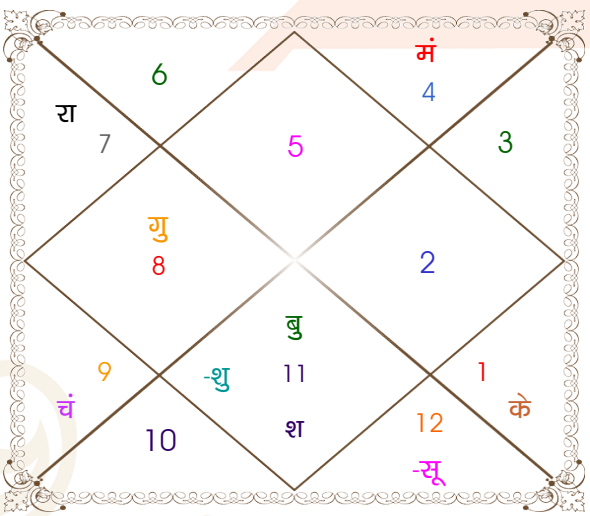


## लग्न-चलित

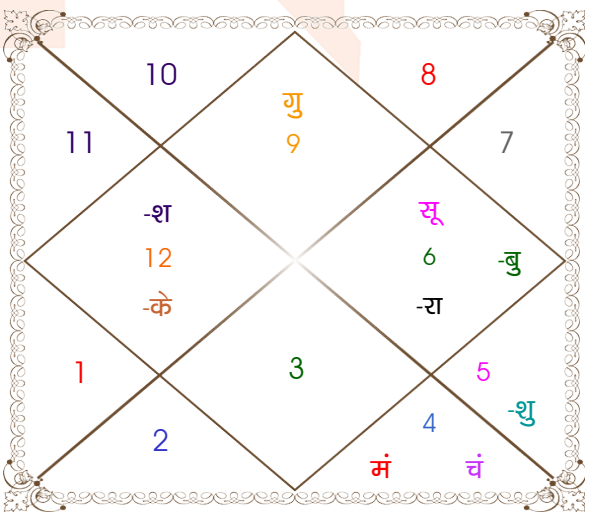

## अष्टकूट गुण सारिणी

| कूट | वर | कन्या | अंक | प्राप्त | दोष | क्षेत्र |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ण | क्षत्रिय | विप्र | 1 | 0.00 | -- | जातीय कर्म |
| वश्य | चतुष्पाद | जलचर | 2 | 1.00 | -- | स्वभाव |
| तारा | क्षेम | वध | 3 | 1.50 | -- | भाग्य |
| योनि | वानर | मेष | 4 | 0.00 | -- | यौन विचार |
| मैत्री | गुरु | चन्द्र | 5 | 4.00 | -- | आपसी सम्बन्ध |
| गण | मनुष्य | देव | 6 | 5.00 | -- | सामाजिकता |
| भकूट | धनु | कर्क | 7 | 0.00 | हाँ | जीवन शैली |
| नाड़ी | मध्य | मध्य | 8 | 0.00 | हाँ | स्वास्थ्य/संतान |
| कुल : | | | 36 | 11.50 | | |

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि डेणंदीं का नक्षत्र पुष्य है।

डतण्ै ईींतहंअं का वर्ग सर्प है तथा डेणंदीं का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्ै ईींतहंअं और डेणंदीं का मिलान ठीक नहीं है।

## मंगलीक दोष मिलान

डतण्ै ईींतहंअं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में द्वादश भाव में धनु, मेष तथा कर्क राशि का मंगल स्थित हो तब मंगली दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल डतण्ै ईींतहंअं कि कुण्डली में द्वादश भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

**भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।**

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डतण्ै ईींतहंअं कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेणंदीं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

**भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।**

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डेणंदीं कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

**कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।**
**न मंगली मंगल राहु योग।**

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र डेणंदीं कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

**त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।**
**त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।**

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु डतण्ै ईींतहंअं कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्ै ईींतहंअं तथा डेणंदीं में मंगलीक मिलान ठीक है।

## निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।